International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 1, Issue- 1 | January - February 2024 ISSN: 3048-9490

सहशिक्षा महाविद्यालय और महिला शिक्षा के शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता का अध्ययन

डॉ. नवीन शर्मा
सहायक आचार्य
कौटिल्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा

सार (Abstract)

किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया की श्रेष्ठता मुख्य रूप से शिक्षण प्रक्रिया और शिक्षक की दक्षता पर निर्भर करती है। शिक्षक जितना सृजनात्मक होगा उतनी ही उसमें उत्कृष्टता देखने को मिलेगी शिक्षा का अर्थ मनुष्य की आंतरिक शक्तियों को बाहर की तरफ लाने को प्रेरित करना है।

शिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षक, विद्यार्थी और पाठ्यक्रम का होना आवश्यक है। शोध में सह शिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण व महिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान की शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में यह देखा गया। सहशिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण व महिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में दक्षता कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सूचक शब्द – शिक्षक, प्रशिक्षण, सृर्जनात्मकता, शिक्षण, दक्षता और विद्यार्थी।

प्रस्तावना –

'शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य है आत्म–ज्ञान (Self knowledge)। यानि शिक्षा खुद को खोजने हेतु निरन्तर प्रक्रिया बनें। इसके लिए बच्चों को विभिन्न तरह के अनुभवों का अवसर देकर इस प्रक्रिया को सुगम बनाने की बात एनसीएफ में कही गई है''।

By NCF-2005

शिक्षा का अर्थ मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की तरफ आने के लिए प्रेरित करना है। टैगोर के अनुसार ''हमारी शिक्षा स्वार्थ पर आधारित परीक्षा पास करने के संकीर्ण मकसद से प्रेरित यथाशीघ्र नौकरी पाने का जरिया बनकर रह गई है जो एक कठिन और विदेशी भाषा में साझा की जा रही है।

इसके कारण हमें नियमों, परिभाषाओं तथ्यों और विचारों को बचपन ही रटते रहने की दिशा की ओर धकेल दिया है। यह न तो हमें वक्त देती है और न ही प्रेरित करती है ताकि हम ठहरकर सोच सके और सीखे हुए को आत्मसात कर सके।[1] व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है ज्ञान मनुष्य का आवश्यक अंग है। जिसके द्वारा मनुष्य अपनी क्षमताओं को ओर बेहतर कर सकता है।[2]

स्वामी विवेकानंद के अनुसार ''समस्त ज्ञान चाहे वह लौकिक है अथवा आध्यात्मिक मनुष्य के मन में है बहुधा वह प्रकाशित न होकर ढका रहता है और जब अज्ञानता का आवरण धीरे–धीरे हटता जाता है तो हम सीखते चले जाते हैं।''[3]

स्वामी विवेकानंद के अनुसार ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य आधुनिक प्रणाली की शिक्षा से नहीं वरन ऐसी शिक्षा से है जो सकारात्मक हो, जिसमें स्वाभिमान तथा श्रृद्धा के भाव जागे विचारों में श्रृद्धा की झलक दिखाई दे। केवल पुस्तक पढ़ा देने से कोई लाभ नहीं है, हमे ऐसी शिक्षा की[4] आवश्यकता है जिसमें चरित्र का निर्माण हो मानसिक शक्ति बढ़े। बुद्धि का विकास हो और देश के बालक आत्मनिर्भर बने।[4] प्रत्येक व्यक्ति में स्वभाव सहित कुछ विशिष्ट प्रवृतियां होती है।

शिक्षा द्वारा इन विशिष्ट प्रवृतियों का विकास हो और इस की अभिव्यक्ति हो'' शिक्षा अपने आप में परिपूर्ण है उसके मूल भाव में न तो सार्थकता है न ही उपयोगिता शिक्षा केवल शिक्षा है जो शिक्षा को अर्जित करता है वह कुछ न कुछ सीखता और सीखकर अपनी समझ व योग्यता में वृद्धि करता रहता है यह कारण है शिक्षा का प्रवाह सतत् रहता है।

शिक्षा केवल विद्यालय व महाविद्यालय में दिए जाने वाले विषय में पारंगत होना मात्र नहीं है वह जीवन पर्यनत जीवन के साथ चलती रहती है। शिक्षा की सार्थकता इसी में है कि निरन्तर सीखते हुए अपनी योग्याताओं में बालक से युवा बनने तक वृद्धि करता रहे।

शिक्षा जीवन व्यापी होती है बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास करना ही शिक्षा का उद्धेश्य होता है तथा शिक्षक एक मित्र सहायक व मार्गदर्शक होता है जो बालक को स्वावलम्बी, निर्भय, सृजनशील, हुनरमंद, कौशलयुक्त तथा अभिव्यक्तिशाली बनाने पर जोर देते है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार ''शिक्षक के गुण–विषय का मर्मज्ञ हो नवीन विषय की व्याख्या प्रस्तुत करने में समर्थ हो उसका चित्त शुद्ध हो मन मे ंकिसी प्रकार द्वेष न हो तथा उसका चरित्र उज्जवल हो व्यवहार सब के प्रति अच्छा हो।[5]

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार एक शिक्षक तब तक सच्ची शिक्षा नहीं दे सकता है जब तक कि वह खुद न सीख रहा हो। एक दीपक तक दूसरे दीपक को नहीं जला सकता जब तक वह खुद न जल रहा हो।''[6]

पेस्टालाजी के अनुसार ''मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील विकास है।[6]

शिक्षण से अभिप्राय –

शिक्षण एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें दो महत्वपूर्ण तत्व होते है–

1. **अध्यापक**
2. **छात्र / विद्यार्थी**

अध्यापक छात्र के निर्दिष्ट आचरण में परिवर्तन सम्भव बनाता है, उसमें लक्षणों का निर्माण करता है तथा ज्ञान तत्व के विकास को गति प्रदान करता है दूसरी और छात्र अध्यापक का अनुसरण करता हुआ ज्ञान पिपासा को शान्त करता है।

अध्यापक की इस क्रिया को शिक्षण व छात्र की क्रिया को सीखना कहा जाता है। शिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य छात्रों के विकास को गति प्रदान करना है इसके लिए उन्हे आवश्यकता अनुसार समय–समय पर प्रेरणा व अभ्यास करवाना आवश्यक होता है।

दक्षता का अभिप्राय –

शिक्षक उस कार्य की तरह होता है। व्यावसायिक योग्यता, जिसमें अर्जित ज्ञान एवं उच्च स्तर की अवधारणा प्रस्तुत करने की योग्यता शामिल है। दक्षता का अर्थ है छात्र को कार्यकुशलता और संरक्षण का सम्यक ज्ञान देना।

शिक्षण एवं अध्ययन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वे कारक शामिल है। सिखाने वाला जिन तरीकों से ज्ञान को प्रवाहित करता है, सीखने वाला उन्ही तरीकों से लक्ष्यों की और बढ़ते हुए नया ज्ञान, आचार व कौषल की समाहित करता हुआ नये अनुभवों को ग्रहण करता है।

शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षा देने वाले शिक्षक बहुत सी शिक्षण दक्षता में परिपूर्ण होते है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार ''शिक्षा सूचना प्रदान करने व कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है यह शिक्षित व्यक्ति को मूल्यों का विचार भी प्रदान करती है वैज्ञानिक एवं तकनीकी

व्यक्ति भी नागरिक है अतः जिस समुदाय में वे रहते है। उस समुदाय के प्रति उनका भी सामाजिक उत्तरदायित्व है।''[9]

शिक्षा की प्रक्रिया एक त्रियामी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षण प्रशिक्षण तथा अनुदेशन शामिल है। शिक्षा के स्वरूप को बी.एस. ब्लूम ने 3 स्वरूपों में प्रतिपादित किया है जो वर्तमान स्वरूप में भी प्रचलित है।[10] जो निम्न है –

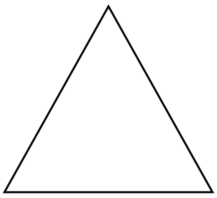

सृजनात्मकता से तात्पर्य –

सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी के Creativity से बना है जिसका अभिप्राय योग्यता एवं कल्पना शक्ति से माना जाता है। डॉ. रघुवीर के अनुसार सृजनात्मकता से तात्पर्य ''सृजन करना, उत्पन्न करना, सृजित करना से है।''[22]

सृजनात्मक वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनाती है। प्रचलित ढंग से हटकर किसी नये ढंग से चिंतन करने व कार्य करने की योग्यता सिखाती है।

प्रो. सुरेश भटनागर के अनुसार'' यद्यपि सृजनात्मकता कलाकारों के जीवन में अधिक व्यापक रूप में पायी जाती है। लेख, चित्रकार, कवि, विद्वान, अभिनेता आदि में सृजनशीलता विद्यमान रहती है। यदि वातावरण इस युग के विकास के अनुकूल हो तो व्यक्ति की क्षमता का मौलिक विकास होता है भारत में छात्रों में निहित सृजनशीलता का विकास न होने से हजारों–लाखों प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है इससे राष्ट्र को हानि होती है।''[23]

बालकों में सृजनात्मकता का विकास करना व्यक्ति व राष्ट्र दोनों के हित में होता है अध्यापक की यह जिम्मेदारी होती है कि वह बालक की प्रतिभा को समझे व उसको बाहर लाने का प्रयत्न करें। बालक की सृजनात्मकता को एक सुव्यवस्थित ढ़ांचा उपलब्ध करवाए जिससे बालक अपनी प्रतिभा का खुलकर प्रयोग कर सकें।

रचनात्मकता अपने विशिष्ट संदर्भ में समस्याओं के नष्ट समाधानों को पहचानने और उनका परीक्षण करने की क्षमता है।

सृजनात्मकता एक प्रतिभा होती है जो बालक के अन्दर छिपी रहती है उसे पहचानना तथा बाहर लाने की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है एक अच्छा अध्यापक बालक के अन्दर छुपी प्रतिभा को पहचानकर उसे बाहर लाने में सहायता करता है।

रचनात्मक शिक्षण की एक ऐसी रणनीति है जिसमें विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान आस्थाओं और कौशल का इस्तेमाल किया जाता है। रचनात्मक रणनीति के माध्यम से विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान और सूचना के आधार पर नई किस्म की समझ विकसित करता है। इसमें विद्यार्थियों को स्वंय जवाब खोजनें के अधिक अवसर मिलते है शिक्षक विद्यार्थियों के जवाब तलाशनें की प्रक्रिया का निरीक्षण करता है उन्हे निर्देशित करता है धीरे–धीरे छात्र यह समझने लगता है कि शिक्षण को रचनात्मक उपागम में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के सभी लक्षण विद्यमान है।

रचनात्मक उपागम इतना सक्षम है कि यदि शिक्षक इसका उपयोग कक्षाओं में करने लग जाए तो विद्यार्थियों का अधिगम स्तर एवं उपलब्धि स्तर बढ़ जाएगा।

शोध के उद्देश्य –

1. सहशिक्षा शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन करना।
2. महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता का अध्ययन करना।

परिकल्पना –

1. शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता का विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन –

1. प्रस्तुत शोध में केवल शैक्षिक नगरी कोटा शहर के सन्दर्भ में ही संपन्न किया जा रहा है।
2. प्रदत्त संकलन हेतु कोटा शहर के महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों व सहशिक्षा शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों को लिया जा रहा है।
3. न्यादर्श के रूप में कोटा शहर के महिला व सहशिक्षा शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत 100 शिक्षकों का चयन किया गया है।

अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि, घटेनोत्तर विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु शोधार्थी ने यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के अन्तर्गत राजस्थान राज्य के कोटा जिले शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत 100 शिक्षक व 400 छात्रों का चुनाव किया जिसमें 50 शिक्षक व 200 छात्र सहशिक्षा शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों से तथा 50 शिक्षक व 200 छात्र महाविद्यालय प्रशिक्षण संस्थानों से है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

1. शिक्षकों की शिक्षण दक्षता हेतु –शिक्षण दक्षता प्रश्नावली
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मापने हेतुः शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित सत्र 2017–18 वर्ष विद्यार्थियों के वार्षिक सैद्धान्तिक परीक्षा के प्राप्तांकों को सम्मिलित किया।
3. विद्यार्थियों की सृजनात्मकता माने हेतुः K.N. शर्मा द्वारा विकसित Divergent Production Ability (DPA-S) उपकरण
4.

सारणी 1

विश्लेषण एवं व्याख्या–

चर / समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	t-Value
पुरूष शिक्षक	25	112.00	22.08	1.68
महिला शिक्षक	25	12.76	30.29	

df (स्वतन्त्रता अंश पर) 25+25–2 = 48

0.05 स्तर पर सार्थकता – 2.010

0.01 स्तर पर सार्थकता – 2.683

विश्लेषण –

उपर्युक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सहशिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष शिक्षकों व महिला शिक्षकों का मध्यमान क्रमशः 112.00 व 120.76 तथा सहशिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष शिक्षकों व महिला शिक्षकों का मानक विचलन क्रमशः 22.08 व 30.29 है।

df - 48 पर दोनों समूहों का t मान 1.168 प्राप्त हातो है जो कि 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 2.010 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना सहशिक्षाशिक्षण–प्रशिक्षणशिक्षकों की शिक्षण–दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं हैं। अतः परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

व्याख्या–

सह शिक्षा शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, क्योकि शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षक दोनों योग्यताधारी होते है अतः उनकी शिक्षण दक्षता लगभग समान ही होती है।

पुरूष शिक्षकों का मध्यमान 112.00 तथा महिला शिक्षकों का 120.76 का मध्यमान प्राप्त हुआ इसके अनुसार महिला शिक्षकों का मध्यमान पुरूष शिक्षकों से कुछ ज्यादा है इस आधार पर कहा जा सकता है कि महिलाओं की शिक्षण दक्षता पुरूष शिक्षकों से थोड़ी सी ज्यादा पाई गई इसका एक कारण यह भी कहा जा सकता है कि महिला सिर्फ शिक्षण कार्य पर ही अपना सारा ध्यान केन्द्रित करती है जबकि पुरूष शिक्षण के अलावा भी कार्यों के देखते है परन्तु यह अन्तर इतना नहीं है कि यह कहा जा सके कि पुरूष शिक्षकों की शिक्षण दक्षता महिला शिक्षकों से बहुत कम है।

निष्कर्ष – अतः यह कहा जा सकता है कि सहशिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं होता।

आरेख क्रमांक – 1

सहशिक्षा एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता

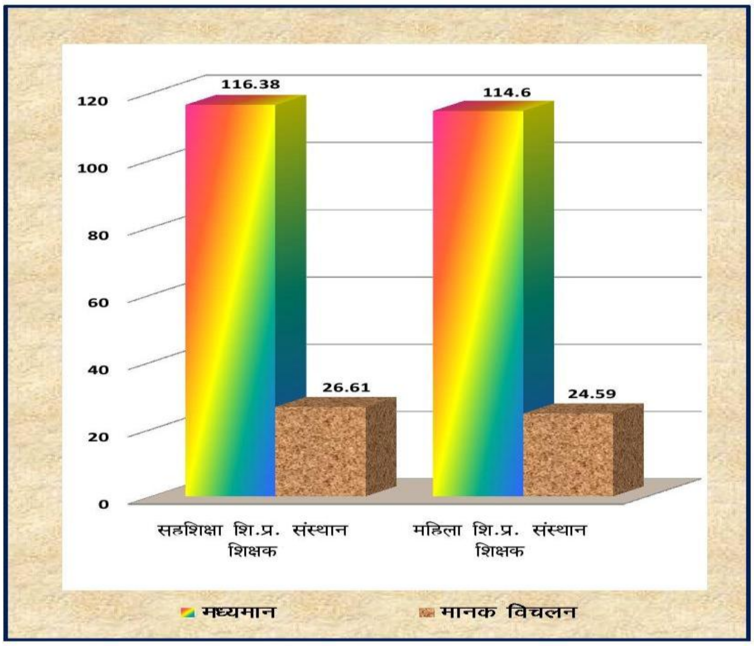

सारणी – 2

महिला शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय

विश्लेषण एवं व्याख्या–

चर/समूह	N	मध्यमान	मानक विचलन	t-Value
पुरूष शिक्षक	25	110.52	24.09	1.178
महिला शिक्षक	25	118.68	24.88	

df (स्वतन्त्रता अंश) 25+25–2 = 48
0.05 स्तर पर सार्थकता – 2.010
0.01 स्तर पर सार्थकता – 2.689

विश्लेषण – उपर्युक्त सारणी से ज्ञात होता है कि महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान क्रमशः 110.52 व 118.68 प्राप्त हुआ जबकि पुरूष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मानक विचलन क्रमशः 24.09 व 24.88 प्राप्त हुआ है।

df–48 पर दोनों समूहों का t मान 1.178 प्राप्त हाते है जो कि 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 2. 010 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना महिला शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष शिक्षकों व महिला शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं हैं। अतः परिकल्पना स्वीकृत किया जाता है।

व्याख्या –

महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया क्योंकि दोनो ही समान रूप से योग्यता रखते है इस आधार पर एक शिक्षक के रूप में उनका चयन महाविद्यालय में किया गया है तो उनकी शिक्षण दक्षता भी लगभग समान होती है।

महिला शिक्षकों का मानक विचलन 24.88 तथा पुरूष शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मानक विचलन 24.09 प्राप्त हुआ इसके आधार पर यह तो कहा जा सकता ळे कि महिलाए अपनी योग्यता को लेकर ज्यादा जागरूक होती है जबकि पुरूष शिक्षक योग्यता से ज्यादा महत्व देते है हर क्षेत्र की जानकारी रखने में परन्तु यह एक मामूली सा अन्तर है इसलिए यह नहीं कहा जा सकता की दोनों की शिक्षण दक्षता में अन्तर है।

निष्कर्ष –

अतः यह कहा जा सकता है कि महिला शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत पुरूष शिक्षक व महिला शिक्षक दोनों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत किया जाता है।

सुझाव –

वर्तमान भारत में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है शिक्षा के लिए मार्गदर्शन का कार्य शिक्षक के द्वारा किया जाता है जो विद्यार्थी को अभिप्रेरित करने का कार्य करता है और उसे लक्ष्य पर

पहुँचाने का कार्य करता है। शिक्षक विद्यार्थी से भावनात्मक/संवेगात्मक रूप से जुड़ा रहे। शिक्षक की दक्षता उसकी उपलब्धि को बढ़ा सकती है। एक दक्ष शिक्षक, विद्यार्थी को लक्ष्य प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में भावी शिक्षको विद्यार्थीयों को एक योग्य ज्ञान वान समाजिक उत्तरदायित्वो के लिए शिक्षक ने शिक्षण दक्षता को प्रवाभी रूप से निखारना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. Singh, Virjesh 27 April 2017 ''शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य क्या है।'' Education Mirror 4 जनवरी 2017
2. केन्द्रीय विद्यालय, क्र.सं. 1 देवलाली पुस्तकालय
3. मासिक शिविर पत्रिका, 7 जनवरी 2020 राकेश
4. सीरवी, चैनाराम मासिक शिविरा पत्रिका 7 जनवरी
5. राकेश ''स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवादी एवं शैक्षिक विचार शिविरा पत्रिका 2 जनवरी 2020
6. कुमार जय एवं सिंह, डॉ एन.के. ''अम्बेडकर नगर जनपद के लोहिया ग्रामों में स्थित प्राथमिक विद्यालयों तथा सामान्य प्राथमिक विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण, प्रशासनकि सुविधाओ और विद्यार्थियों का शैक्षिक निष्पादन का तुलनात्मक अध्ययन'' शिक्षण शिक्षा शोध पत्रिका, 2018 Vol. 12 No. 01
7. Education Mirror (4 जनवरी 2017) ''शिक्षक का अर्थ शैक्षिक शोध व विमर्श